ध्यान दें:

9

काव्यशास्त्र प्रवेश-2

कवि की कारयित्री प्रतिभा से समुद्धृत कर्म काव्य होता है। और उस काव्य के विश्लेषण के लिए जिस शास्त्र का प्रादुर्भाव हुआ उसे अंलकारशास्त्र कहते हैं। अलंकारशास्त्र कवि कर्म काव्य का दर्पण होता है। अलंकारशास्त्र में कहे गए मार्ग के द्वारा काव्य के परिशीलन से कवि कौन, प्रतिभा क्या, काव्य के लक्षण और प्रकार, काव्य उत्तम अथवा अधम किस प्रकार का, सहृदय कौन, रस क्या, काव्य में गुण, अलंकार, रीतियों का प्रयोग, वृत्ति का स्वरूप क्या इत्यादि विषयों का ज्ञान होता है। अलंकार शास्त्रज्ञ ही काव्य के उत्तम परिशीलन में समर्थ होते हैं। काव्य अनुशीलन के लिए संस्कृत साहित्य परम्परा में रचे अलंकार शास्त्रों में आनन्दवर्धन कृत ध्वन्यालोक, जगन्नाथ कृत रसगंगाधर, मम्मट आचार्य कृत काव्यप्रकाश, दण्डी रचित काव्यादर्श, विश्वनाथ कृत साहित्यदर्पण, राजशेखर कृत काव्यमीमांसा, अप्पय दीक्षित कृत कुवलयानन्द इत्यादि ग्रन्थ अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

अलंकारशास्त्र का नामकरण अत्यन्त प्राचीन है। जिस समय में यह नामकरण हुआ। तब अलंकार बहुत प्रसिद्ध थे कुछ कल्पना करते हैं। अलंकरण अलंकार है। अलंकरण सौन्दर्य है। किसी ने कहा है उससे गुण, अलंकार, रीति आदि सभी का ग्रहण होता है। यहाँ उसका प्रमाण है- काव्य ग्राह्यमलंकरात्, 'सौन्दर्यमलंकार' कहा गया है। राजशेखर ने अलंकारशास्त्र इस नाम के स्थान पर साहित्य विद्या नाम स्वीकार किया।

यह अलंकारशास्त्र ही वैदिक लौकिक ज्ञान के लिए अत्यन्त उपकारक होता है। राजशेखर के द्वारा वेदांगत्व को स्वीकार किया गया। 'पंचमी साहित्य विद्या इति यायावरीयः, सा च चतसृणां विद्यानां निष्यन्दरूपा'।

अलंकारशास्त्रों में प्रतिपादित कुछ पारिभाषिक शब्दों के परिचय के लिए अलंकारशास्त्र पद परिचय इस पाठ का आविर्भाव हुआ। इस पाठ में कवि का स्वरूप, कवि के भेद, प्रतिभा का स्वरूप, सहृदयों का स्वरूप, काव्य का स्वरूप, काव्य का प्रयोजन, वृत्ति का स्वरूप और उसके भेद, रस स्वरूप और उसके भेद वर्णित है।

ध्यान दें:

उद्देश्य

इस पाठ को पढकर आप सक्षम होंगे:

- कवि के स्वरूप और उसके भेदों को जान पाने में;
- प्रतिभा के स्वरूप को जान पाने में;
- सहृदय के स्वरूप को जान पाने में;
- काव्य के स्वरूप को जान पाने में;
- काव्य के प्रयोजन को जान पाने में;
- वृत्ति के स्वरूप और वृत्ति भेद को जान पाने में;
- रस के स्वरूप और रस भेदों को जान पाने में;

9.1) कवि का स्वरूप और कवि के भेद

''अपारे काव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते॥''

ध्वन्यालोककार आनन्दवर्धनाचार्य का कवि महात्मयपरक वचन प्रसिद्ध ही है। कवि काव्य संस्कार का प्रजापति होता है। जैसे वह निर्माण की इच्छा करता है, वैसे ही काव्य को निर्मित करता है। वह काव्य रसिकों सहृदयों का परम आदरणीय है। जो काव्यकर्ता है वह कवि होता है। कवते अर्थात् वर्णित करता है। किस प्रकार का वर्णन कवि करते हैं यह प्रश्न सभी के मन में उठता है। यहाँ उपस्थित प्रत्यक्षीकृत का अपनी प्रतिभा से सरस वाणी युक्त कथन वर्णन होता है। उसी प्रकार के वर्णन से कवि स्वयं रसास्वाद करता है और अन्यों को कराता है। प्रतिभा दो प्रकार की है- कारयित्री और भावयित्री। वहाँ कारयित्री प्रतिभा से ही कवि काव्य को निर्मित करता है। काव्य निर्माण के लिए प्रतिभा के साथ व्युत्पत्ति भी अपेक्षित है। कवि की काव्य रचना आकाश पुष्प के समान मिथ्याभूत नहीं होती वहाँ वास्तविकता अवश्य ही रहती है। कवि वास्तविक अर्थ को ही लोकोत्तर चमत्कार के सन्निवेश से वर्णित करता है। कवि शब्द का सामान्यतः कारयित्रीप्रतिभावान व्युत्पत्तिमान अर्थ वर्णित है। वैसे ही काव्यमीमांसाकार राजशेखर 'प्रतिभाव्युत्पत्तिमान् च कविः कविरित्युच्यते'। यास्क आचार्य के मत में क्रान्तदर्शी अर्थ है।

काव्यमीमांसानुसार कवि तीन प्रकार के होते हैं शास्त्र कवि, काव्यकवि और उभयकवि।

क- शास्त्र कवि- जो कवि शास्त्रीय विषयों को काव्य रूप से प्रस्तुत करता है वह शास्त्र कवि है। शास्त्रीय विषयों को शास्त्रीय शैली में निबद्ध से शास्त्र कवि काव्य में रस सम्पद् विच्छेद को धारण करता है। शास्त्र कवि पुनः तीन प्रकार से विभक्त होता है। शास्त्र का रचयिता, शास्त्र में काव्य का निवेशयिता और काव्य में शास्त्र का निवेशयिता।

ख- काव्य कवि- जो कवि कथन वैचित्र्य से शास्त्र में स्थित तार्किक अर्थ के शैथिल्य को सम्पादित करता है वह काव्य कवि है। राजशेखर के मत में काव्य कवि आठ प्रकार से विभक्त हैं- रचना कवि, शब्द कवि, अर्थ कवि, अलंकार कवि, उक्ति कवि, रस कवि, मार्ग कवि तथा शास्त्रार्थ कवि।

ध्यान दें:

ग- उभय कवि- जो कवि अपने अनुभव के आधार से शास्त्रीय विषय को वैसे प्रस्तुत करता है जैसे शास्त्रीय रूप के साथ काव्य रूप भी वह कवि धारण करता है।

पाठगत प्रश्न-2

1. कवि शब्द किस धातु से उत्पन्न है?
2. कवि महात्मयपरक आनन्दवर्धन का क्या वचन है?
3. कवि किस प्रतिभा के द्वारा काव्य को निर्मित करता है?
4. कवि शब्द का यास्क के मत में क्या अर्थ है?
5. राजशेखर के मत में प्रतिभा के साथ क्या काव्य निर्माण के लिए अपेक्षित है?
6. कवि का लक्षण क्या है?
7. कवि कितने प्रकार के है?
8. शास्त्र कवि कौन है?
9. काव्य कवि कौन है?
10. उभय कवि कौन है?

9.2) प्रतिभा

जैसे सूर्य प्रकाशन शक्ति के बिना कुछ भी प्रकाशित करने में समर्थ नहीं है। इसी प्रकार प्रतिभा के बिना कवि काव्य की सृष्टि में समर्थ नहीं है। भट्टतौत ने प्रतिभा का स्वरूप क्या कहा है।

'प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता।'

प्रतिभा नवीन अर्थो के प्रकाशन में समर्थ प्रज्ञा होती है। प्रतिभा प्रज्ञा के प्रकार भूत है। भामह कहते हैं प्रतिभा काव्य के निमार्ण में हेतु है।

आचार्य वामन ने काव्यालंकार सूत्र वृत्ति ग्रन्थ में कहा है।

'कवित्वबीजं प्रतिभानम्'। कवित्व का बीज प्रतिभा होती है। प्रतिभा के बिना काव्य निष्पन्न नहीं होता। और यदि काव्य निष्पन्न हो जाए तो उपहास प्राप्त होगा न कि यश।

अभिनवगुप्ताचार्य के मत में

'अपूर्ववस्तुनिर्माणक्षमा प्रज्ञा प्रतिभा'। अर्थात् नवीन विषय की संरचना में समर्थ प्रज्ञा प्रतिभा होती है।

जगन्नाथ के मत में- 'काव्य घटनानुकूल शब्दार्थो पस्थितिः प्रतिभा'। काव्यघटना को काव्य के निर्माण में अनुकूल शब्द अर्थ की उपस्थिति शब्द अर्थ के अनुकूल विकास प्रतिभा होती है।

प्रतिभा का लक्षण राजशेखर के द्वारा कहा गया है- 'या शब्दग्रामम् अर्थसार्थम् अलंकार-तन्त्रम्

उक्तिमार्गम् अन्यदपि तथाविधम् अधिहृदयं प्रतिभासयति सा प्रतिभा।' प्रतिभा एक कविनिष्ठ विशेष शक्ति है या शब्द अर्थ अलंकार रीति अन्य भी काव्य तत्व हृदय में प्रतिभासित होते हैं। वह प्रतिभा राजशेखर के मत में कारयित्री और भावयित्री दो प्रकार की होती है। वहाँ कवि की काव्य रचनाओं की उपकारिका कारयित्री प्रतिभा है। भावयित्री प्रतिभा काव्य के अनुशीलन में सहृदयों के भावों की उपकारिका है।

अलंकारिकों के अनुसार वह संस्कार से जनित प्रतिभा ही काव्य का कारण है। इसलिए भामह कहते है-

'काव्यं तु जायते जातु कस्यचित्प्रतिभावतः।'

राजशेखर के अनुसार व्युत्पत्ति और प्रतिभा काव्य के कारण है। इसलिए कहा गया है- 'प्रतिभाव्युत्पत्ती मिथः समवेते श्रेयस्यौ इति यायावरीयः'। उचित अनुचित विवेक व्युत्पत्ति है।

मम्मटाचार्यानुसार प्रतिभा, व्युत्पत्ति, अभ्यास यह तीन काव्य का कारण है। निरन्तर काव्य के निर्माण अथवा अध्ययन में प्रवृत्ति अभ्यास है। इसलिए उन्होंने कहा है-

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥

रुद्रटाचार्य के मत में भी **'प्रतिभाव्युत्पत्याभ्यासाः काव्यहेतुः'**।

दण्डि के मत में -

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहुनिर्मलम्।
अमन्दश्चाभियोगोऽस्याः कारणं काव्यसम्पदः॥

किन्तु-

'अव्युत्पत्तिकृतो दोषः शक्त्या संव्रियते कवेः।
यत्वशक्तिकृतस्तस्य स झटित्यवभासते॥'

आनन्दवर्धनाचार्य के मत विश्लेषण से ज्ञात होता है प्रतिभा शक्ति ही काव्य का हेतु है। एवं प्रतिभा काव्य के निर्माण में हेतु उसके सहायक व्युत्पत्ति अभ्यास मानना ही उचित है।

पाठगत प्रश्न-2

11. भट्टतौत के मत में प्रतिभा क्या है?
12. अभिनवगुप्ताचार्य के मत में प्रतिभा क्या है?
13. जगन्नाथ के मत में प्रतिभा लक्षण क्या है?
14. राजशेखर के मत में प्रतिभा लक्षण क्या है?
15. राजशेखर के मत में प्रतिभा कितने प्रकार की है?
16. व्युत्पत्ति किसे कहते हैं?
17. अभ्यास किसे कहते हैं?

ध्यान दें:

18. मम्मटानुसार काव्य के कितने कारण हैं?

19. वस्तुतः काव्य का क्या कारण है?

9.3) सहृदय

कवि के समान हृदय सहृदय होता है। कवि का काव्य तभी प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है जब वह काव्य सहृदय के हृदयों को आह्लादित करता है। कवि के समान सहृदयों का भी महत्व है। इसलिए अभिनवगुप्त लोचन के आरम्भ में कहते हैं-

'सरस्वत्यास्तत्वं कविसहृदयाख्यं विजयते।'

काव्यरूपी वाग्देवी शरीर के दो अंश है कवि और सहृदय। वहाँ कवि प्रख्यावान् अर्थात् कारयित्री प्रतिभावान् है। सहृदय उपाख्यावान् अर्थात् भावयित्री प्रतिभावान् है। भावयित्री प्रतिभा ही कवि के श्रम और अभिप्राय को भावित करता है। अन्य प्रतिभा के द्वारा ही कवि का व्यापार सार्थक होता है। अन्यथा कवि का व्यापार तो विपरीत परिणाम वाला होता है। एवम् इस प्रकार के भावयित्री प्रतिभावान सहृदय ही कवि रचित काव्य के आस्वादक है।

अभिनवगुप्तपाद के द्वारा इस प्रकार के सहृदयों के स्वरूप को लोचन में कहा गया है- येषां काव्यानुशीलनाभ्यासवशाद् विशदीभूते मनोमुकुरे वर्णनीयविषयतन्मयीभवनयोग्यता ते एव हृदयसंवादभाजः सहृदयाः।' सदैव काव्य अनुशीलन से जिनका मन कवि काव्यों में रमता है वे ही सहृदय होते हैं। सहृदय कविनिर्मित काव्य को श्रवण करते हुए तन्मय होकर कवि के समान नहीं रसमग्न होता है। कवि काव्य रचना से काव्य रसास्वाद में स्वतन्त्रता को भजता है। परन्तु सहृदय कवि द्वारा वर्णित को सुनते हुए रसास्वादन करता है वह काव्य अधीन है। सहृदय के भावुक, रसिक, भावक, सचेता इत्यादि नाम है।

पाठगत प्रश्न-3

20. सहृदय का लक्षण क्या है?

21. सरस्वती के दो तत्व क्या हैं?

22. सहृदय किस प्रकार प्रतिभावान हैं?

23. सहृदय के नामकरण कितने हैं?

1.4) काव्य

कवि का कर्म इस अर्थ में कवि शब्द से कर्म अर्थ में **'गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्म च'** इस सूत्र से ष्यञ् प्रत्यय से काव्य शब्द निष्पन्न होता है। कवि की कारयित्री प्रतिभा से उत्पन्न कर्म काव्य होता है।

उस काव्य का क्या लक्षण है, अलंकारिकों के द्वारा काव्य के बहुत से लक्षण कहे गए है। जैसे अग्निपुराण में-

ध्यान दें:

'संक्षेपाद् वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।
काव्यं स्फुरदलंकार गुणवद्दोषवर्जितम्॥

अर्थात् इष्ट अर्थ को प्रकट करने वाली पदावली काव्य है। इष्ट अर्थ 'अत्यधिक चमत्कृत लोकोत्तर आह्लाद जनक अर्थ' है। उसी प्रकार का व्यवस्थित पद समूह ही काव्य है। जिसमें अलंकार प्रकट हो जो दोषरहित और गुणयुक्त हो।

यह ही दण्डी ने कहा- **'शरीरंतावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।'**

आनन्दवर्धनाचार्य के मत में **'सहृदयहृदयाह्लादिशब्दार्थमयत्वमेव काव्य लक्षणम्'** इति। सहृदयों के हृदयों को आह्लादित करने वाले जो शब्द और अर्थ है, वह ही काव्य है।

भामह के मत में काव्यलक्षण है-'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'। शब्द और अर्थ साथ में लोकोत्तर चमत्कार कारक धर्म से संयुक्त होकर काव्य होता है।

वामन के मत में - 'काव्यं ग्राह्यमलंकारात्'। यह काव्य शब्द गुण और अलंकारों से युक्त शब्दार्थ है।

आलंकारिक भोज के मत में- 'निर्दोष गुणवत्काव्यमलंकारैरलंकृतम्'। दोषरहित गुणसहित अलंकारों से अलंकृत वाक्य काव्य होता है।

आचार्य मम्मट -'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि'। दोषरहित गुणों से युक्त सर्वत्र अलंकार से युक्त और कहीं अलंकारों से रहित भी शब्द और अर्थ काव्य है।

जगन्नाथ के रसगंगाधर में -'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'। रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य है। रमणीयता अर्थात् लोकोत्तर आनन्द। लोकोत्तर आनन्द का जनक रमणीय है। लोकोत्तर आनन्द जनक के अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य होता है।

विश्वनाथ कविराज ने साहित्य दर्पण में कहा है- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'। रस से युक्त वाक्य काव्य होता है।

वाक्य किस प्रकार का होता है विश्वनाथ ने कहा है-

'वाक्यं स्याद्योग्यताकाङ्काक्षासक्तियुक्तः पदोच्चयः।' उसी प्रकार के पदों का समूह वाक्य होता है जिस पद समूह में योग्यता, आकांक्षा और आसत्ति रहती है।

यहाँ पद किसे कहा गया है-

'वर्णाः पदं प्रयोगार्हानन्वितैकार्थबोधकाः।'

पदार्थों के परस्पर सम्बन्ध में बाधा का अभाव योग्यता है। पदार्थों का अभिधादि वृत्तियों के द्वारा पद के प्रतिपादन का अर्थों के परस्पर सम्बन्ध में परस्पर अन्वय बोध में बाधा का अभाव योग्यता है। जैसे- कृष्णो नगरं याति। किन्तु वह्निना सिंचति इस प्रकार के परस्पर सम्बन्ध में अग्नि सींचन में समर्थ नहीं हो सकती। बाधा के होने से वाक्य में योग्यता का अभाव है।

पदों की पदों के अनन्तर अपेक्षा आकांक्षा होती है। इसलिए निराकांक्षा के गौः, अश्वः, पुरुषः, यह वाक्य नहीं है।

ध्यान दें:

आसत्ति पदार्थों में उपस्थित बाधा का न होना है। तेन देवदत्तः इस पद का बहुत देर बाद उच्चारण से गच्छतीति इससे संगति न होने के कारण वाक्य नहीं होता है।

इसी प्रकार कुछ भामह मम्मट आदि आलंकारिकों ने शब्द और अर्थ की प्रधानता से, कुछ दण्डी, जगन्नाथ और कविराज ने शब्द की प्रधानता से काव्य लक्षणों को कहा। वहाँ बुद्धि अनुसार लक्षणों को ग्रहण किया गया है। क्योंकि सारे ही लक्षण अपने वैशिष्टय को धारण करते हैं। और वह काव्य ध्वनि काव्य और गुणीभूतव्यंग्य काव्य के भेद से दो प्रकार का होता है। फिर दृश्य श्रव्य के भेद से उसके दो प्रकार है। इसी प्रकार उसके भेदों के विषय में अधिक ज्ञान के लिए साहित्य दर्पण आदि ग्रन्थ देखिए।

पाठगत प्रश्न-4

24. काव्य शब्द में क्या शब्द और क्या प्रत्यय है?
25. काव्य शब्द निष्पत्ति का सूत्र क्या है?
26. अग्निपुराण में काव्य का लक्षण क्या कहा गया है?
27. दण्डि द्वारा कहा गया काव्य लक्षण क्या है?
28. भामह द्वारा कहा गया काव्य लक्षण क्या है?
29. आनन्द वर्धन द्वारा कहा गया काव्य लक्षण क्या है?
30. जगन्नाथ द्वारा कहा गया काव्य लक्षण क्या है?
31. मम्मट का काव्य लक्षण क्या है?
32. विश्वनाथ का काव्य लक्षण क्या है?
33. वाक्य का लक्षण साहित्यदर्पणकार के मत में क्या है?
34. पद लक्षण साहित्यदर्पणकार के मत मे क्या है?
35. आकांक्षा क्या है?
36. योग्यता क्या है?
37. आसत्ति क्या है?

1.5) काव्य प्रयोजन

'प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते' यह उक्ति सुप्रसिद्ध ही है। इस प्रकार के काव्य के निर्माण में क्या प्रयोजन यह प्रश्न सभी के मन में आता है। वहाँ काव्यतत्वज्ञ आलंकारिको ने बहुत से काव्य के प्रयोजनों को कहा। वहाँ काव्यप्रकाश के मम्मटाचार्य का यह मत है-

'काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥'

यश के लिए, अर्थ के लिए, व्यवहार को जानने के लिए, अमंगल के नाश के लिए, तुरन्त ही

ध्यान दें:

परम आनन्द की प्राप्ति के लिए और कान्ता के समान उपदेश देने के लिए काव्य होता है। काव्य कीर्ति को उत्पन्न करता है, अर्थ को देता है और व्यवहार ज्ञान को देता है। काव्य के द्वारा भगवान नारायणादि के पूजन से अमंगल का नाश होता है। काव्य को सुनने से ब्रह्मानन्द सहोदर रस को उत्पन्न करता है। काव्य कान्ता के समान उपदेश देने वाला होता है। वेद प्रभुसम्मित होते हैं। वे ईश्वर के समान सत्य बोलते है और धर्म का उपदेश करते हैं। परन्तु काव्य प्रिया के समान होता है। प्रिया अर्थात् पत्नी जैसे मधुर वाणी के द्वारा पति में कृत्य अकृत्य के विवेक को उत्पन्न करता है। वैसे ही काव्य सरस शैली के द्वारा 'राम के समान आचरण करना चाहिए न कि रावण के समान' करने योग्य और न करने योग्य विवेक को उत्पन्न करता है।

इस प्रकार ही विश्वनाथ कहते है-

'चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते।''

चतुर्वर्ग का नाम धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष है। भगवान नारायण को मानने वाले' एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुग् भवति' इत्यादि वचनों से और काव्य से धर्म प्राप्ति करते है। अर्थ प्राप्ति तो जैसे श्री हर्ष के नाम से रत्नावली नाटिका के निर्माण से धावक ने बहुत से धन को प्राप्त किया। और काम प्राप्ति धन से ही होती है। मोक्ष प्राप्ति काव्य से उत्पन्न धर्मादिफल से होती है। और मोक्षोपयोगी वाक्यों में व्युत्पत्ति कारक काव्य होता है। इस प्रकार चतुर्वर्गफल को प्राप्त कराने वाला काव्य है।

इसी प्रकार भामह ने कहा है-

'धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिषेवणम्॥'

चतुर्वर्गफल की प्राप्ति वेदादि शास्त्रों के द्वारा नीरसता से, काव्य से तो सरसता से होती है यही काव्य की विशेषता है। क्योंकि रोग का नाश कड़वी औषधियों से हो इसकी अपेक्षा मीठी औषधि से ही सभी चाहते हैं।

काव्य धर्मादिसाधन उपाय के लिए उत्कृष्ट हेतु है। वैसा ही अग्नि पुराण में व्यास ने कहा है-

'नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा॥

इस प्रकार की समीक्षा से आता है कि पुरुषार्थ बोध और रसास्वाद दो काव्य के मुख्य प्रयोजन है। बोध के और रसास्वाद के मध्य में रसास्वाद ही काव्य का प्रमुख प्रयोजन है। महिमभट्ट ने कहा है-

'काव्ये रसयिता सर्वो न बोद्धा न नियोगभाक्'।

पाठगत प्रश्न-5

38. मम्मटाचार्य के मत में काव्य प्रयोजन क्या है?

39. विश्वनाथ के मत में काव्य प्रयोजन क्या है?

40. काव्य से अमंगल का नाश कैसे होता है?

41. भामह आचार्य के मत में काव्य क्या करता है?

42. अग्नि पुराण में काव्य के विषय में कहा गया है?

43. काव्य के दो प्रयोजन क्या है?

44. काव्य का सभी की अपेक्षा क्या मुख्य प्रयोजन है और उसका क्या प्रमाण है।

9.6) वृत्ति का स्वरूप

शब्द प्रतिपादक होते हैं और अर्थ प्रतिपाद्य होते हैं। शब्द तीन प्रकार के है- वाचक, लक्षक और व्यंजक। शब्द के समान अर्थ भी तीन प्रकार के हैं- वाच्य, लक्ष्य और व्यंग्य। शब्द जिस व्यापार से अर्थ का बोध कराता है वह व्यापार वृत्ति है। और शब्दनिष्ठ अर्थ बोधक व्यापार विशेष वृत्ति होती है। वृत्ति शक्ति का व्यवहार भी विश्वनाथ के द्वारा किया गया है। वह शक्ति तीन प्रकार की है- अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। विश्वनाथ ने कारिका में कहा है-

वाच्योऽर्थोऽभिधया बोध्यो लक्ष्यो लक्षणया मत:।
व्यंग्यो व्यंजनया ताः स्युस्तिस्रः शब्दस्य शक्तय:॥

इस प्रकार वाच्यार्थ की प्रतिपादिका अभिधा, लक्ष्यार्थ की प्रतिपादिका लक्षणा और व्यंग्यार्थ की प्रतिपादिका व्यंजना होती है।

9.6.1) अभिधा स्वरूप

शब्दार्थ की प्रतिपादिक शक्तियों में पहली होती है-वाच्यार्थ का प्रतिपादन करने वाली अभिधा। अभिधा का लक्षण विश्वनाथ कहते हैं-

'तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाभिधा।'

वहाँ तीनों शक्तियों के मध्य में संकेतित अर्थ का संकेत इच्छा विशेष उस विषय के अर्थ के बोध से, कथन से अभिधा प्रथम होती है। संकेतित अर्थात् संकेत विषय। संकेत क्या है तो गदाधरभट्टाचार्य कहते हैं।-

जो पदों के अर्थों का बोध कराता हो। इस शब्द से यह अर्थ समझना चाहिए। संकेत अर्थ का बोध कराने वाला व्यापार वृत्ति है।

इसी प्रकार संकेत स्वाभाविक व्यापार है, ऐसा मीमांसको का मत है। संकेत से ही पद और पदार्थ के बीच में नियत वाच्य वाचक सम्बन्ध सिद्ध करता है। वाच्य वाचक सम्बन्ध सत्व आदि से ही अग्नि शब्द समय रूप के लिए नहीं समझा जाता। इसी प्रकार सामान्य संकेतित अर्थ नाम वाच्य हो सकता है अथवा मुख्य अर्थ।

उस संकेत ग्रह के क्या उपाय है यह प्रश्न उत्पन्न होता है। वहाँ संकेत ग्रह की प्रसिद्ध कारिका है-

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोशाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च।
वाक्यस्य शेषाद्विवृतेर्वदन्ति सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः॥

ध्यान दें:

वहाँ व्याकरणादि के द्वारा संकेतग्रह के उदाहरणों को क्रम से प्रस्तुत किया गया है-

क) व्याकरण से संकेत ग्रह का उदाहरण- पाचकः। यहाँ पच् धातु कर्तरि ण्वुल प्रत्यय से पाचक शब्द का पाक कर्तरि संकेत बोध होता है।

ख) उपमान से संकेतग्रह का उदाहरण - गोसदृशो गवयः। गौ के समान गवय उपमान से गवय के दर्शन से यह गौ के समान है इसीलिए गवय शब्द से संकेत ग्रहण होता है।

ग) 'विष्णुर्नारायणः कृष्णः' अमरकोश से नारायण आदि शब्दों का विष्णु संकेत ग्रहण होता है।

घ) 'अयम् अश्वशब्दवाच्यः' इस आप्त वाक्य से बालक 'यह पशु अश्व शब्द का बोध कराता है' संकेत को धारण करता है।

ङ) व्यवहार से संकेत ग्रह जैसे- उत्तम वृद्ध के द्वारा मध्यम वृद्ध को उद्देश्य करके गाय लाने को कहा गया। तब मध्यम् वृद्ध गाय को लाता है। उस गाय को लाने में प्रवृत्त को देखकर बालक वाक्य का सास्ना आदि पिण्ड को लाने के अर्थ को जानता है। फिर गाय को बाँधो कहकर के मध्यम वृद्ध गाय को बाँधता हैं। इसी प्रकार बालक आवोपोद्वाप (अन्वय,व्यतिरेक) गो शब्द का सास्नादि अर्थ इस संकेत को धारण करता है।

च) वाक्य शेष से संकेत ग्रहण जैसे- 'यवमयश्चरुर्भवति' ऐसा सुनकर यव शब्द का दीर्घशूक में प्रिय अंग अथवा प्रयोग ऐसा संशय है। वहाँ-

''वसन्ते सर्वशस्यानां जायते पत्रशातनम्।
मेदमानाश्च तिष्ठन्ति यवाः कणिशशालिनः॥''

इस प्रकार विध्यर्थ आकांक्षा के प्रर्वत होने से वाक्यशेष के द्वारा दीर्घशूक में यव शब्द का संकेत ग्रहण होता है।

छ) विवृतिर्नाम विवरणम्। विवरण से शक्ति का ग्रहण जैसे- 'हरिः वासुदेवः'। यहाँ अश्वादि अनेक अर्थ से हरि शब्द का अर्थ क्या इस संशय में वासुदेव ऐसे विवरण से हरि शब्द का वासुदेव में संकेत ग्रहण होता है।

ज) सिद्ध पद के सान्निध्य से संकेत ग्रहण जैसे- 'इह प्रभिन्नकमलोदरे मधूनि मधुकरः पिबति'। मधुकर शब्द का भ्रमर अथवा मधुमक्खी अर्थ इस संशय में कमन पद के सान्निध्य से मधुकर शब्द का भ्रमर रूप में संकेत ग्रहण होता है।

और वह संकेत जाति, गुण, द्रव्य और क्रिया में ग्रहण किया जाता है। दर्पणकार कहते है-

''संकेतो गृह्यते जातौ गुणद्रव्यक्रियासु च।''

9.6.2) लक्षणा का स्वरूप

लक्षणा लक्ष्यार्थ की प्रतिपादिका होती है। उसका स्वरूप क्या है- विश्वनाथ कहते हैं।

'मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययान्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता॥'

मुख्यार्थ बाध में अर्थात् अभिधा प्रतिपादित अर्थ के बाध में रूढ़ि अथवा प्रयोजन से जिस वृत्ति के द्वारा उस कहे गए मुख्य अर्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ की प्रतीति होती है। वह शब्द में आरोपित वृत्ति

ध्यान दें:

लक्षणा है। कहा गया है प्रयोजन से अथवा रूढ़ि (प्रसिद्धि) से मुख्यार्थ का बाध होता है।

यह लक्षणा रूढ़िमूला और प्रयोजनमूला के भेद से दो प्रकार की है। वहाँ रूढ़ि का अर्थ प्रसिद्धि है। रूढ़िमूला जैसे- कलिंग साहसिक:। यहाँ साहस का धर्म चेतन में ही सम्भव होता है। अचेतन में कलिंग नामक देश-विदेश में सम्भव नहीं होता है। कलिंग शब्द का मुख्य अर्थ बाधित है। तब प्रसिद्धि से कलिंग शब्द कलिंग देशवासी इस अर्थ में लक्षणा का प्रतिपादन करते हैं। उससे कलिंग देश के निवासी साहसी हैं यह अर्थ सम्भव होता है।

प्रयोजनमूला लक्षणा का उदाहरण जैसे 'गंङ्गायाघोष:'। यहाँ गंङ्गा शब्द का मुख्य अर्थ है जल प्रवाह विशेष। वहाँ घोष का होना असम्भव ही है। गंगा शब्द का जल प्रवाह रूप मुख्यार्थ का बाध है। वह बाधित गंगा शब्द वक्ता के तात्पर्य सिद्धि में जल प्रवाह से युक्त तीर रूपी अर्थ के लिए लक्षणा से बोधन होता है। गंगा में शीतलता और पावनता आदि धर्म घोष में भी हैं ऐसा प्रयोजन है। और दो प्रकार की लक्षणा पुन: उपादान लक्षणा और लक्षण लक्षणा के भेद से दो प्रकार की है। वहाँ उपादान लक्षणा का लक्षण है-

''मुख्यार्थस्येतराक्षेपो वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये।
स्यादात्मनोऽप्युपादानादेषोपादानलक्षणा॥''

जिस लक्षणा वृत्ति के द्वारा वाक्यार्थ में अन्वय सिद्धि के लिए जहाँ मुख्य अर्थ अन्य अर्थ का आक्षेप कराता है, मुख्यार्थ का भी ग्रहण होता है वह उपादान लक्षणा है। उसका उदाहरण है जैसे-श्वेतो धावति। श्वेत शब्द के गुण वाचकत्व से उसके दौड़ने की क्रिया के अनन्वय से मुख्य अर्थ का बाध होता है। तब उपादान लक्षणा श्वेत शब्द का श्वेत वर्ण विशेष अश्व के अर्थ का ग्रहण करती है। फिर श्वेत अश्व की ओर दौड़ने की क्रिया में अन्वय सिद्ध होता है।

लक्षण लक्षणा का लक्षण-

''अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थे परस्यान्वयसिद्धये।
उपलक्षणहेतुत्वादेषा लक्षण लक्षणा॥''

जिस लक्षणा वृत्ति के द्वारा वाक्यार्थ में दूसरे मुख्य अर्थ से भिन्न की अन्वय सिद्धि में अपने मुख्य अर्थ को त्याग देता है वह लक्षण लक्षणा है। उसका उदाहरण गङ्गयां घोष: है। वहाँ गंगा पद जल प्रवाह रूपी अर्थ के लिए अपने स्वरूप के समर्पण से वहाँ उपलक्षण लक्षणा है।

इस प्रकार से ही लक्षणा के सारोपा साध्यवसाना इत्यादि अनेक आवान्तर प्रकार सम्भव हैं।

9.6.3) व्यंजना का स्वरूप

व्यंजना व्यंग्यार्थ की प्रतिपादिका होती है। उसका क्या स्वरूप है? विश्वनाथ कहते हैं-

''विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते पर:।
सा वृत्तिर्व्यंजना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च॥''
''शब्दबुद्धिकर्मणां विरम्य व्यापारभाव:''

इस मत से अभिधा लक्षणा आदि वृत्तियों में अपने अपने अर्थ को प्रतिपादित करके जिस शक्ति के द्वारा दूसरे वाच्यार्थ लक्ष्यार्थ से भिन्न अर्थ का बोध होता है वह वृत्ति शब्द के अर्थ के प्रकृति और प्रत्ययादि में व्यंजना कहलाती है। इस प्रकार व्यंजना अभिधा, लक्षणा आदि सकल वृत्तियों से अतिरिक्त

ध्यान दें:

आलंकारिक प्रपंच में सुप्रसिद्ध कोई नवीन वृत्ति है।

जैसे उदाहरण – गतोऽस्तमर्कः। यहाँ खेलते हुए बालक के प्रति पिता कहता है घर जाओ यह अर्थ व्यंजना से ज्ञात होता है। और वह व्यंग्यार्थ ध्वनि प्रतीयमान अर्थ से भी व्यवहृत होती है।

इस प्रकार के अनुभव सिद्ध अर्थ के प्रतिपादन के लिए ही व्यंजना वृत्ति है। उस वृत्ति का आविर्भाव आनन्दवर्धनाचार्य के ध्वन्यालोक नामक ग्रन्थ में प्रथम दिखाई देता है। और वह वृत्ति-अभिधामूला और लक्षणामूला के भेद से दो प्रकार की है। वहाँ अभिधामूला का लक्षण है-

'अनेकार्थस्य शब्दस्य संयोगाद्यैर्नियन्त्रिते।
एकत्रार्थेऽन्यधीहेतुर्व्यंजना साभिधाश्रया॥'

अभिधा के संयोग से शब्द के संयोगादि से एक अर्थ के नियन्त्रण में अन्य अर्थ के ज्ञान की हेतु व्यंजना अभिधामूला होती है।

संयोगादि पद से यहाँ वि-प्रयोगादि पदों का ग्रहण करते हैं। कौन शक्ति नियामक संयोगादि है इस कारिका में कहा है-

संयोगो विप्रयोगश्च साहचर्यं विरोधिता।
अर्थः प्रकरणं लिंङग शब्दस्यान्यस्य सन्निधिः॥
सामर्थ्यमौचिती देश कालो व्यक्तिः स्वरादयः।
शब्दार्थस्यानवच्छेदे विशेषस्मृतिहेतवः॥

शब्द के अर्थ का अनवच्छेद होने पर संयोगादि उसके नियामक होते हैं। संयोगादि के क्रम से उदाहरणों को प्रस्तुत किया गया है।

क.) संयोग का उदाहरण- **सशंखचक्रो हरिः**। हरि शब्द विष्णु यम आदि अनेक अर्थों का वाचक है। परन्तु यहाँ शंख चक्र के सम्बन्ध से हरि शब्द विष्णु अर्थ में वर्णित है।

ख.) विप्रयोगे **अशंखचक्रो हरिः**। हरि शब्द के अनेक अर्थ के वाचकत्व में भी शंख चक्र सहित का ही एव वियोग से हरि शब्द विष्णु अर्थ को कहता है।

ग.) साहचर्य का उदाहरण **भीमार्जुनौ। ''अर्जुनः ककुभे पार्थे कार्तवीर्यमयूरयोः''** इत्यादि कोष से अर्जुन शब्द का पार्थ अथवा कार्तवीर्य अर्जुन इत्यादि अर्थ के सन्देह में भीम के साहचर्य से अर्जुन पार्थ है।

घ.) विरोधिता **कर्ण अर्जुन** का उदाहरण। यहाँ भी अर्जुन शब्द के अनेक अर्थ का कर्ण से विरोधी पद साहचर्य से पार्थ अर्थ का बोध होता है।

ङ.) प्रयोजन को अर्थ कहते हैं। **अर्थे भवच्छिदे स्थाणुं वन्दे इति उदाहरणम्।** स्थाणु शब्द का शिव, पत्थर, खण्ड आदि अनेक वाचक के संसारोच्छेद रूप प्रयोजन बल से शंकर अर्थ में प्रयुक्त है।

च.) प्रकरण में उदाहरण होता है **सर्वं जानाति देवः**। यहाँ देव पद से सुर, नृप के सन्देह में राज प्रकरण से देव शब्द राजापरक है।

छ.) धर्म का नाम लिंग है। यहाँ उदाहरण है **कुपितो मकरध्वजः**। मकरध्वज शब्द का कामदेव

ध्यान दें:

समुद्र वाचक के कोप रूप प्राणि धर्म से लिंग से काम देव के अर्थ में प्रयुक्त है।

ज.) अन्यशब्दसन्निधि का **देवः पुरारिः** उदाहरण है। पुरारि शब्द खल और महादेव अर्थ में है। यहाँ देव पद के सान्निध्य से पुरारि शब्द का महादेव अर्थ से बोध होता है।

झ.) सामर्थ्य का उदाहरण है **मधुना मत्तः पिकः**। मधु शब्द मद्य अर्थ में और वसन्त अर्थ में प्रयुक्त है। वहाँ कोयल के मद की प्रसिद्धि से सामर्थ्य से मधुशब्द वसन्त वाचक है।

ञ.) औचित्य का उदाहरण पातु **वो दयितामुखम्**। मुख शब्द के अनेक अर्थों के यहाँ औचित्य से सामुख्य अर्थ में प्रयुक्त है।

ट.) स्थान को देश कहते हैं। यहाँ उदाहरण **विभाति गगने चन्द्रः** इति। चन्द्र शब्द के इन्द्र, कपूर और शशि अर्थ है। यहाँ गगन रूप देश से चन्द्र शब्द शशि का ही बोध होता है।

ठ.) काल का उदाहरण- **निशि चित्रभानुः**। चित्रभानु सूर्य अथवा अग्नि है इस सन्देह में निशा काल से चित्रभानु शब्द का अग्नि अर्थ में बोध होता है।

ड.) लिंग का अर्थ व्यक्ति है। उसका उदाहरण **भाति रथांगम् है**। रथांग शब्द चक्रपरक और चक्रवाक पक्षी परक है। यहाँ नपुंसक लिंग से रथांग शब्द का चक्र का ग्रहण होता है। इसी प्रकार स्वरादि शब्दार्थ के नियामक होते हैं।

अभिधामूला का उदाहरण है-

दुर्गालङ्घितविग्रहो मनसिजं सम्मीलयश्चेतसा।
प्रोद्यद्राजकलो गृहीतगरिमा विष्वग्वृतो भोगिभिः।
नक्षत्रेशकृतेक्षणो गिरिगुरौ गाढां रूचिं धारयन्
गामाक्रम्य विभूतिभूषिततनू राजत्युमावल्लभः॥

यहाँ उमा के पति शिव अथवा उमा नाम की राज महिषी के स्वामी भानुदेव राजा है इस सन्देह में प्रकरण से अभिधा के द्वारा उमावल्लभ शब्द का उमा नाम की राज महिषी के पति स्वामी भानुदेव राजा का अर्थ आता है। वहाँ से अभिधामूला व्यंजना से गौरी के पति शिव इस अर्थ को स्वीकार करते है। एवम् उमा नामक राज महिषी के पति भानुदेव गौरी के पति शिव के समान प्रतीत होते हैं।

लक्षणामूला व्यंजना का उदाहरण-

'लक्षणोपास्यते यस्य कृते तत्तु प्रयोजनम्।
यया प्रत्याच्यते सा स्याद् व्यंजना लक्षणाश्रया॥'

जिस प्रयोजन के लिए लक्षणा का आश्रय लिया जाता है उस प्रयोजन का जो बोध कराती है वह लक्षणामूला व्यंजना होती है।

जैसे गंगाया घोषः यहाँ गंगा शब्द का गंगा के तीर में प्रयोजन लक्षणा है। एवं लक्षणा विरत है। लक्षणा का शीतलता और पवित्रता का आधिक्य प्रयोजन होता है। वह प्रयोजन व्यंजना का बोध कराता है। वह व्यंजना लक्षणामूला व्यंजना होती है।

यहाँ से भी शब्दी आर्थी इत्यादि व्यंजना के अनेक प्रकार होते हैं।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-6

45. शब्द कितने प्रकार के हैं और वे कौन-से हैं?
46. अर्थ कितने प्रकार के हैं और वे कौन-से हैं?
47. वृत्ति क्या है?
48. वृत्ति के कितने भेद हैं और वे कौन-से हैं?
49. अभिधा का लक्षण क्या है?
50. गदाधर के मत में संकेत क्या है?
51. संकेत कहाँ-कहाँ ग्रहण करते हैं?
52. लक्षणा का स्वरूप क्या है?
53. रूढ़िमूला लक्षणा का उदाहरण क्या है?
54. प्रयोजन मूला लक्षणा का उदाहरण क्या है?
55. उपादान लक्षणा क्या है?
56. लक्षण लक्षणा क्या है?
57. उपादान लक्षणा का उदाहरण क्या है?
58. लक्षण लक्षणा का उदाहरण क्या है?
59. व्यंजना का स्वरूप क्या है?
60. व्यंजना सामान्यत: कितने प्रकार की है, कौन-कौन सी है?
61. शक्ति नियामक प्रतिपादित कारिका को वर्णित कीजिए।

9.7) रसस्वरूप

काव्य का परम प्रयोजन रसास्वाद है। और वह रस क्या है यह प्रश्न उत्पन्न होता है। इसके उत्तर में कहा गया है- 'रस्यते आस्वाद्यते इति रस:'। अर्थात् काव्य नाट्यादि कलाओं में परम आस्वादित रस है। यह रस ही काव्य की आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित है। इसके उन्मेश के लिए ही कवि चेष्टा करते हैं। और सहृदय इस प्रकार के काव्य अध्ययन से ही आस्वादन करते हैं।' न हि रसादृते कश्चिदर्थ: प्रवर्तते' भरत मुनि ने रस को काव्य की आत्मा के रूप में प्रतिष्ठापित किया है।

उस रस का स्वरूप पूरक सूत्र इस प्रकार है- **'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद् रसनिष्पत्ति:'**। विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

विभाव क्या है इस प्रश्न के उत्तर में विभाव का स्वरूप निर्दिष्ट किया जा रहा है। लोकोत्तर से सहृदयों के हृदय में आस्वाद योग्य रति आदि स्थायी भाव को करते हैं जिनसे वह राम-कृष्ण आदि काव्य में निवेशित होकर विभाव होते हैं। साहित्य दर्पण में विभाव का लक्षण है-

ध्यान दें:

रत्याद्युद्बोधकाः लोके विभावाः काव्यनाटययोः।

अनुभाव क्या है- विभावादिगत चेष्टा अनुभाव है। उसका लक्षण साहित्य दर्पण में कहा है-

उद्बुद्धं कारणैः स्वैः स्वैर्बहिर्भावं प्रकाशयन्।
लोके यः कार्यरूपः सोऽनुभावः काव्यनाट्ययोः॥

व्यभिचारी भाव क्या है। निर्वेदादि प्रभृति व्यभिचारी भाव है। रति आदि स्थायी भाव स्थिर रूप से है निर्वेदादि रति आदि भाव से उद्भूत होते हैं और उन्हीं में तिरोहित होते हैं वे व्यभिचारी भाव होते हैं। व्यभिचारी भाव हैं- निर्वेद, आवेग, दैन्य, श्रम, मद, जड़ता, औग्रय, मोह, विबोध, स्वप्न, अपस्मार, गर्व, मरण, अलसता, अमर्ष, निद्रा, अवहित्था, औतसुक्य, उन्माद, शंका, स्मृति, मति, व्याधि, त्रास, लज्जा, हर्ष, असूया, विषाद, धृति, चपलता, ग्लानि, चिन्ता और वितर्क।

विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भावों के संयुक्त होने पर स्थायी भाव रसत्व को प्राप्त करता है यह सूत्र का आशय है। रति शोकादि भाव रस प्राप्ति में पहले से ही स्थित रहते हैं। इसलिए संसार में रतिशोकादि भाव स्थायी भाव कहलाते हैं। स्थायी भाव नौ है वे इस प्रकार हैं-

'रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा।
जुगुप्सा विस्मयश्चेत्थमष्टौ प्रोक्ताः शमोऽपि च'॥

रस स्वरूप के व्याख्यान अवसर पर चारों वाद सम्यक् रूप से प्राप्त होते हैं। वे इस प्रकार है- **'रसः उत्पद्यते' भट्टलोल्लट का उत्पत्ति वाद, 'रसः अनुमीयते' श्री शंकुक का अनुमितिवाद, 'रसः भुज्यते' भट्टनायक का भुक्तिवाद, 'रसः अभिव्यक्तिवाद।** इन वादों में अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद ही विद्वानों के द्वारा सिद्धान्त रूप से स्वीकृत है।

एवं रससूत्र में अभिव्यक्तिवाद के अनुसार निष्पत्ति जिसका अभिव्यक्ति अर्थ है। और इस प्रकार सूत्र अर्थ होता है- विभाव के अनुभाव के और व्यभिचारी भाव के संयोग से स्थायीभाव रस के स्वरूप को प्राप्त करता है। इसलिए अभिव्यक्ति वाद के समर्थक विश्वनाथ कविराज ने कहा है-

''विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणा तथा।
रसतामेति रत्यादिः स्थायिभावः सचेतसाम्॥''

वस्तुतः रस का आस्वादन में प्रयोग नहीं होता। क्योंकि आस्वाद ही रस है। इसलिए अभिनवगुप्त कहते हैं-'रसाः प्रतीयन्ते इति तु ओदनं पचति इतिवद् व्यवहारः' इति। रस के स्वरूप का निरूपण, आस्वादन के प्रकार को साहित्य दर्पणकार के द्वारा प्रस्तुत किया गया है-

''सत्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशनन्दचिन्मयः।
वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः।
लोकोत्तरचमत्कारप्राणः कैश्चित्प्रमातृभिः
स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः॥''

बाहरी विषयों से चित्तवृत्तियों को हटाने वाला कोई अन्तःकरण का धर्म सत्व कहलाता है। उसके उद्रेक से एक अखण्ड आनन्दस्वरूप, अन्य जाने हुए पदार्थों के स्पर्श से रहित, आनन्दमय ब्रह्म के साक्षात्कार के समान, लोकोत्तर चमत्कार है जिसका वह रस अपने आकार के सामान अभिन्न रूप से किसी सहृदय के द्वारा आस्वादन करता है।

जिन सब भावनाओं का संसार में अनुभव किया जाता है उन सबका ही काव्य में लोकोत्तर अनुभव होता है। इसका कारण साधरणीकरण होता है। विभाव अनुभाव आदि में सहृदयों का मन जैसे-जैसे प्रवर्तत

ध्यान दें:

होता है वैसे-वैसे तन्मयता बढ़ती है। तब रज तम से अभिभूत होकर बाहरी चित्तवृत्तियों से विमुख होकर सत्व का प्रकाशन होता है। तब देश कालादि सम्पूर्ण लौकिक उपाधि सम्बन्धों का नाश कर सहृदय उत्पन्न होते हैं। तब विभावादि साधारण निर्विशेष होते हैं। यह व्यापार ही साधरणीकरण है। तब साधरणीकरण के लिए विभावादि के द्वारा व्यक्त स्थायीभाव रस के स्वरूप् को प्राप्त करता है। पण्डितराज जगन्नाथ ने 'रत्याद्यवच्छिन्ना भग्नावरणा चिदेव रस' भिन्न मत को पुष्ट किया है। उनके मत की यहाँ आलोचना नहीं की गई है।

फिर से कितने रस होते हैं प्रश्न पर स्थायी भाव के नौ होने से नौ रस होते हैं उत्तर प्राप्त होता है। और वे-

'शृंगारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः।

बीभत्साद्भुतसंज्ञो चेत्यष्टो शान्तोऽपि नवमो रसः॥'

उन रसों के स्थायी भावों, वर्णों और देवों की तालिका नीचे दी गई है-

क्रम	रस	स्थायी भाव	देवता	वर्ण
1.	शृंगार	रति	विष्णु	श्याम
2.	हास्य	हास	प्रथमगण	श्वेत
3.	करुण	शोक	यम	कपोत
4.	रौद्र	क्रोध	रुद्र	रक्त
5.	वीर	उत्साह	महेन्द्र	हेमवर्ण/गौर
क्रम	**रस**	**स्थायी भाव**	**देवता**	**वर्ण**
6.	भयानक	भय	काल	कृष्ण
7.	वीभत्स	जुगुप्सा	महाकाल	नील
8.	अद्भुत	विस्मय	गन्धर्व/ब्रह्म	पीत
9.	शान्त	शम	नारायण	अतिधवलवर्ण

पाठगत प्रश्न-7

62. रससूत्र क्या है?

63. रस के चारों वाद किस-किस के क्या-क्या हैं?

64. विभाव का लक्षण क्या है?

65. अनुभाव का लक्षण क्या है?

66. व्यभिचारी भाव का लक्षण क्या है?

67. रस के विषय में किसका वाद सभी की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं?

ध्यान दें:

68. अभिनवगुप्त के मत में रस सूत्र का अर्थ क्या है?
69. साहित्य दर्पण में कही गई रस अभिव्यक्ति की कारिका क्या है?
70. रसास्वाद कारिका को लिखिए?
71. कौन-से व्यापार से विभावादि निर्विशेष होते हैं?
72. स्थायी भाव का लक्षण क्या है?
73. स्थायी भाव कितने हैं?
74. जगन्नाथ का रस लक्षण क्या है?
75. रस कितने हैं?
76. श्रृंगारहास्यकरूण रसों के कौन-कौन देवता है?
77. श्रृंगारहास्यकरूण रसों के क्या-क्या वर्ण है?
78. रौद्रवीरभयानक रसों के कौन-कौन देवता है?
79. रौद्रवीरभयानक रसों के क्या-क्या वर्ण है?
80. बीभत्सअद्भुतशान्त के कौन-कौन देवता है?
81. बीभत्सअद्भुतशान्त के क्या-क्या वर्ण है?

पाठ सार

काव्य के समीचीन परिशीलन के लिए काव्य उपकारकों के लिए अलंकार शास्त्र को निर्मित किया गया। अलंकारशास्त्र काव्य का दर्पण भूत होता है। अलंकारशास्त्र में कहे गए मार्ग से काव्य के परिशीलन से ही काव्य का यथार्थ ज्ञान होता है। काव्य अनुशीलन के लिए संस्कृतसाहित्यपराम्परा में रचित अलंकारशास्त्रों में आनन्दवर्धन कृत ध्वन्यालोक, जगन्नाथ कृत रसगंगाधर, मम्मटाचार्य कृत काव्यप्रकाश, दण्डी रचित काव्यादर्श, विश्वनाथ कविराजकृत साहित्यदर्पण, राजशेखर कृत काव्यमीमांसा, अप्पयदीक्षित कृत कुवलयानन्द इत्यादि ग्रन्थ अत्यन्त प्रसिद्ध है।

काव्य रसिकों के सहृदयों के परम आदरणीय कवि काव्य संसार का प्रजापति होता है। कवृ वर्णने इस धातु से कवि शब्द निष्पन्न होता है। जो कवते हैं वह कवि है। कवि अपनी प्रतिभा से सरस वाणी के द्वारा वर्णन करता है। प्रतिभा दो प्रकार की है- कारयित्री और भावयित्री। वहाँ कारयित्री प्रतिभा के द्वारा ही कवि काव्य को निर्मित करता है। कवि वास्तविक अर्थ को ही लोकोत्तर चमत्कार के सन्निवेश से वर्णित करता है। एवं कवि साधारणत: कारयित्री प्रतिभावानों को व्युत्पत्तिवानों को वर्णित करता है। काव्यमीमांसादि अनुसार कवि तीन प्रकार के होते हैं शास्त्र कवि, काव्यकवि और उभयकवि।

सूर्य जैसे प्रकाशन शक्ति के बिना कुछ भी प्रकाशित करने में समर्थ नहीं है इसी प्रकार प्रतिभा के बिना कवि काव्य को रचने में समर्थ नहीं है। उसके स्वरूप को भट्टतौत 'प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता' कहते है। इस प्रकार से बहुत से अलंकारिकों के द्वारा प्रतिभा के बहुत से लक्षण कहे गए

ध्यान दें:

हैं। राजशेखर के मत में वह प्रतिभा कारयित्री और भावयित्री दो प्रकार की है। वहाँ कवि की काव्य रचनाओं की उपकारिका कारयित्री प्रतिभा है। भावयित्री प्रतिभा तो काव्य के अनुशीलन में सहृदयों के भावों की उपकारिका है। भामह अनुसार प्रतिभा ही काव्य का कारण है। राजशेखर अनुसार व्युत्पत्ति और प्रतिभा काव्य का कारण है। व्युत्पत्ति उचित अनुचित का विवेक है। मम्मटाचार्य ने प्रतिभा, व्युत्पत्ति अभ्यास ये तीन काव्य के कारण कहे है। अभ्यास निरन्तर काव्य के निर्माण में अध्ययन अथवा प्रवृत्ति है। रुद्रट और दण्डी का भी यही मत है। ध्वन्यालोक के मत के पर्यायलोचन से सिद्धान्त रूप से यह कहा जा सकता है कि प्रतिभा ही काव्य का कारण है। व्युत्पत्ति और अभ्यास प्रतिभा के सहायक है।

सहृदय भावयित्री प्रतिभा से युक्त होते हैं। उसका लक्षण अभिनव गुप्त ने कहा है-'येषां काव्यानुशीलनाभ्यासवशाद् विशदीभूते मनोमुकुरे वर्णनीयतन्मयीभवनयोग्यता ते एव कविहृदयसंवादभाजः संहृदयाः' इति।

फिर कवि के कर्म को काव्य कहा गया है। उस काव्य के अलंकारिकों के द्वारा बहुत से लक्षण दिए गए हैं। उनमें वामन भामह मम्मटादि ने शब्द अर्थ की प्रधानता से, कुछ दण्डी, जगन्नाथ और कविराज ने शब्द की प्रधानता से काव्य लक्षण को कहा। इस पाठ में अग्नि पुराण में कहा गया, दण्डी द्वारा कहा गया, आनन्द वर्धन का, भामह का, वामन का, भोज का, मम्मट का, जगन्नाथ का और विश्वनाथ कविराज के काव्य लक्षणों को संगृहीत किया गया है। उनमें विश्वनाथ कविराज का 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इसके वर्णन के समय पर वाक्य के स्वरूप और पद के स्वरूप को देखा। फिर आकांक्षा, योग्यता और आसत्ति को देखा। और वह काव्य ध्वनिकाव्य और गुणी भूत व्यंग्य के भेद से दो प्रकार का है। फिर दृश्य श्रव्य के भेद से पुनः दो प्रकार का होकर काव्य को प्रतिपादित किया है।

उस काव्य के प्रयोजनों को संगृहीत किया गया है। मम्मट के, विश्वनाथ के और अग्निपुराण के प्रयोजन को यहाँ संगृहीत किया है। उससे सिद्धान्त रूप से पुरुषार्थबोध और रसास्वाद काव्य का प्रयोजन आया। उसमें भी रसास्वाद ही परम प्रयोजन है।

शब्दनिष्ठ अर्थ की प्रतिपादक व्यापार विशेष वृत्ति होती है। और वह तीन प्रकार की है-अभिधा, लक्षणा, और व्यंजना। उसमें वाच्यार्थ का बोध कराने वाली अभिधा, लक्ष्यार्थ का बोध कराने वाली लक्षणा और व्यंग्यार्थ का बोध कराने वाली व्यंजना होती है। उनमें अभिधा ही संकेतित अर्थ का बोध कराती है। संकेत जाति, गुण, द्रव्य, क्रिया से ग्रहण किया जाता है। मुख्य अर्थ का बाध रूढ़ि अथवा प्रयोजन से मुख्य अर्थ से सम्बद्ध अन्य अर्थ का जिसके द्वारा बोध होता है वह आरोपित शक्ति लक्षणा है। वह ही प्रधान रूप से रूढ़िमूला और प्रयोजन मूला दो प्रकार से विभक्त है। फिर उपादान लक्षणा और लक्षण लक्षणा ये चार प्रकार होते हैं। इसी प्रकार लक्षणा के अनेकों भेद हैं। व्यंजना तो अभिधादि से अलग व्यंग्यार्थ के प्रतिपादन के लिए प्रवृत्त है। वह ही अभिधामूला और लक्षणामूला के भेद से दो प्रकार का है। अभिधामूला के प्रतिपादन के समय शक्ति नियामक संयोगादि को वर्णित किया गया है। इस प्रकार सम्यक्र रूप से वृत्ति के स्वरूप को कहा है।

फिर रस के स्वरूप का पर्यालोचन किया गया है। वहाँ रससूत्र की व्याख्या के समय चार वादों को कहा है। उनमें अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद सिद्धान्तभूत है। वहाँ रस सूत्र में स्थित विभाव अनुभाव व्यभिचारी भावों के लक्षण को कहा हैं। उसके बाद उनके साधरणीकरण को कहा। रसास्वाद के प्रकार साहित्य दर्पणकार ने कहे है। स्थायी भाव नौ होने से नौ रस कहे है। उनमें सामान्यतः स्थायीभाव, वर्ण,

ध्यान दें:

देवताओं का संग्रह करके एक तालिका के रूप में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार सम्यक् रूप से इस पाठ के सार को कहा।

पाठान्त प्रश्न

1. कवि के स्वरूप और कवि के भेदों को वर्णित करें?
2. प्रतिभा के स्वरूप को वर्णित करें?
3. काव्य उत्पत्ति के हेतु के विषय में मतों को वर्णित करें?
4. सहृदयों के स्वरूप को वर्णित करें?
5. काव्य के स्वरूप को वर्णित करें?
6. वाक्य के लक्षण को वर्णित करें?
7. आकांक्षा, योग्यता और आसत्ति के लक्षणों को वर्णित करें?
8. काव्य के प्रयोजनों को वर्णित करें?
9. वृत्ति के स्वरूप प्रतिपादन के लिए एक वृत्ति को प्रतिपादित करें?
10. अभिधा को प्रतिपादित करें?
11. लक्षणा को वर्णित करें?
12. संकेत ग्रह के उपायों को वर्णित करें?
13. शक्तिनियामकों को वर्णित करें?
14. व्यंजना को वर्णित करें?
15. रसस्वरूप को वर्णित करें?
16. रससूत्र को पर्यालोचित करें?
17. रसभेदों को वर्णित करें?
18. कवि शब्द किस धातु से निष्पन्न है?

    क- कु धातु ख- कवृ धातु ग- कव् धातु।
19. कवि भेद नहीं है।

    क- शास्त्र कवि ख- स्मृति कवि ग- काव्य कवि घ- उभयकवि।
20. कारयित्री प्रतिभावान् कौन है?

    क- कवि ख- सहृदय ग- नायक घ- प्रतिनायक।
21. प्रख्या क्या है?

    क- कारयित्री प्रतिभा ख- भावयित्री प्रतिभा ग- व्युत्पत्तिः घ- अभ्यास।

ध्यान दें:

22. काव्य का परम प्रयोजन क्या है?

क- यशोलाभ ख- पुरुषार्थ बोध ग- रसास्वाद

घ- व्यवहार ज्ञान।

23. गंगायां घोष: यहाँ क्या लक्षणा है?

क- रूढ़िमूला ख- प्रयोजनमूला ग- उपादान लक्षणा।

आपने क्या सीखा

- कवि के स्वरूप एवं उनके भेदों को;
- प्रतिभा के स्वरूप को;
- सहृदय के स्वरूप को;
- काव्य के स्वरूप को;
- काव्य प्रयोजन को;
- वृत्ति स्वरूप और वृत्ति भेद:
- रस स्वरूप एवं रसभेदों को;

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. कवि शब्द कवृ धातु से उत्पन्न है।
2. कवि की महत्तापरक आनन्दवर्धन का वचन है-

''अपारे काव्यसंसारे कविरेक: प्रजापति:।
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते॥''

3. कवि कारयित्री प्रतिभा के द्वारा काव्य को निर्मित करता है।
4. कविशब्द का यास्क के मत में क्रान्तदर्शी अर्थ है।
5. राजशेखर के मत में प्रतिभा के साथ व्युत्पत्ति काव्य निर्माण के लिए अपेक्षित है।
6. कारयित्री प्रतिभा से युक्त कवि होता है।
7. कवि तीन प्रकार के है- शास्त्र कवि, काव्य कवि और उभय कवि।
8. जो कवि शास्त्रीय विषयों को काव्य रूप से प्रस्तुत करता है वह शास्त्रकवि है।
9. जो कवि वचन वैचित्र्य से शास्त्र में स्थित तर्क का अर्थ का शिथलता से सम्पादन करता है वह काव्य कवि है।
10. जो कवि अपने अनुभव के आधार से शास्त्रीय विषयों को वैसे प्रस्तुत करता है जैसे शास्त्रीय रूप के साथ काव्य रूप को भी धारण करता है वह उभय कवि है।

ध्यान दें:

उत्तर-2

11. भट्टतौत के मत में-'प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता।'
12. अभिनव गुप्ताचार्य के मत में-'अपूर्ववस्तुनिर्माणक्षमा प्रज्ञा प्रतिभा'।
13. जगन्नाथ के मत में प्रतिभा का लक्षण है-'काव्य घटनानुकूल शब्दार्थोपस्थिति: प्रतिभा'।
14. राजशेखर के मत में 'या शब्दग्रामम् अर्थसार्थम् अलंकार तन्त्रम् उक्तिमार्गम् अन्यदपि तथाविधम् अधिहृदयं प्रतिभासयति सा प्रतिभा।'
15. राजशेखर के मत में प्रतिभा दो प्रकार है- कारयित्री और भावयित्री।
16. व्युत्पत्ति उचित अनुचित के विवेक का नाम है।
17. अभ्यास नाम निरन्तर
18. मम्मट के मत में प्रतिभा, अभ्यास और व्युत्पत्ति काव्य का कारण है
19. वस्तुत: प्रतिभा काव्य का कारण है।

उत्तर-3

20. सहृदय का लक्षण है-'येषां काव्यानुशीलनाभ्यासवशाद् विशदीभूते मनोमुकुरे वर्णनीय विषय तन्मयीभवन योग्यता ते एव हृदय संवादभाज: सहृदया:।
21. सरस्वती के दो तत्व कवि और सहृदय है।
22. सहृदय भावयित्री प्रतिभा से युक्त होते हैं।
23. सहृदय के भावक, भावुक, रसिक, सचेता इत्यादि नाम है।

उत्तर-4

24. काव्य शब्द में कवि शब्द और ष्यञ् प्रत्यय है।
25. काव्य शब्द की निष्पत्ति का 'गुणवचनब्राह्मणदिभ्य: कर्म च' सूत्र है।
26. अग्नि पुराण में काव्य का लक्षण है-

    'संक्षेपाद् वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।
    काव्यं स्फुरदलंकार गुणवद्दोषवर्जितम॥'
27. दण्डि ने काव्य का लक्षण कहा है- 'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।'
28. भामह ने काव्य का लक्षण कहा है- 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।'
29. आनन्दवर्धन ने काव्य का लक्षण कहा है-'सहृदयहृदयाह्लादिशब्दार्थमयत्वमेव काव्यलक्षणम्।'
30. जगन्नाथ ने काव्य लक्षण कहा है-'रमणीयार्थप्रतिपादक: शब्द: काव्यम्।
31. मम्मट का काव्यलक्षण है 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुन: क्वापि'
32. विश्वनाथ का काव्य लक्षण है- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।'
33. वाक्य का लक्षण साहित्य दर्पण के मत में है 'वाक्यं स्याद्योगताकांक्षासतियुक्त: पदोच्चय:।'

ध्यान दें:

34. साहित्य दर्पण के मत में पद का लक्षण है 'वर्णाः पदं प्रयोगार्हानन्वितैकार्थबोधकाः।'

35. पदों की पद के बाद अपेक्षा आकांक्षा होती है।

36. पदार्थों के परस्पर सम्बन्ध में बाधा का अभाव योग्यता है।

37. पदार्थों में उपस्थित बाधा का न होना आसत्ति है।

उत्तर-5

38. मम्मटाचार्य के मत में काव्यप्रयोजन है-

'काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥'

39. विश्वनाथ के मत में काव्य का प्रयोजन है

'चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते॥''

40. काव्य के द्वारा भगवान नारायाणादि के पूजन से अमंगल का नाश होता है।

41. भामहाचार्य के मत में

'धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिषेवणम्॥

42. अग्निपुराण में काव्य के विषय में कहा है-

'नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा॥

43. काव्य के प्रयोजन दो है- पुरुषार्थबोध और रसास्वाद।

44. काव्य का सभी की अपेक्षा रसास्वाद मुख्य प्रयोजन है। और वहाँ प्रमाण महिमभट्ट का वचन है। 'काव्ये रसयिता सर्वो न बोद्धा न नियोगभाक्।

उत्तर-6

45. शब्द तीन प्रकार का है वाचक, लक्ष्यक और व्यंजक।

46. अर्थ तीन प्रकार का है- वाच्य, लक्ष्य और व्यंग्य।

47. शब्द निष्ठ अर्थ की बोधक व्यापार विशेष वृत्ति होती है।

48. वृत्ति के तीन भेद हैं- अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

49. अभिधा का लक्षण-'तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाभिधा।'

50. गदाधर के मत में संकेत- 'इदं पदमिमम् अर्थं बोधयतु इति अस्मात्पदाद् अयमर्थो बोद्धव्य इति वेच्छा संकेतरूपा वृत्तिः इति।

51. संकेत जाति, गुण, द्रव्य, क्रिया आदि में प्राप्त होता है।

52. लक्षणा का स्वरूप है-'मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययान्योऽर्थः प्रतीयते। रूढ़ेः प्रयोजनाद्वसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।

ध्यान दें:

53. रूढ़िमूला लक्षणा का कलिंग साहसिक उदाहरण है।

54. प्रयोजनमूला लक्षणा का गंङ्गायां घोषः उदाहरण है।

55. उपादान लक्षणा का लक्षण है-

'मुख्यार्थस्येतराक्षेपो वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये।
स्यादात्मनोऽप्युपादानादेषोपादानलक्षणा''॥ इति।

56. लक्षण लक्षणा का लक्षण है।

'अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थे परस्यान्वयसिद्धये
उपलक्षणहेतुत्वादेषा लक्षण लक्षणा।'

57. उपादान लक्षणा का उदाहरण श्वेतो धावति है।

58. लक्षण लक्षणा का उदाहरण गंङ्गायां घोषः है।

59. व्यंजना का स्वरूप दर्पण में है

'विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः।
स वृत्तिर्व्यंजना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च।

60. व्यंजना सामान्यतः दो प्रकार की अभिधामूला, व्यंजनामूला है।

61. शक्ति नियामक प्रतिपादन की दो कारिका है-

संयोगो विप्रयोगश्च साहचर्यं विरोधिता।
अर्थः प्रकरणं लिंगं शब्दस्यान्यस्य सन्निधिः॥
सामर्थ्यमौचिती देश कालो व्यक्तिः स्वरादयः।
शब्दार्थस्यानवच्छेदे विशेषस्मृतिहेतवः॥ इति॥

उत्तर-7

62. रससूत्र है- 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद् रसनिष्पत्तिः इति।

63. रस के चार वाद है- 'रसः उत्पद्यते' भट्टलोल्लट का उत्पत्तिवाद, 'रसः अनुमीयते' श्री शंकुक का अनुमितिवाद, 'रसः भुज्यते' भट्टनायक का भुक्तिवाद, 'रसः अभिव्यज्यते' अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद।

64. विभाव का लक्षण है- रत्याद्युद्बोधकाः लोके विभावाः काव्यनाट्ययोः।

65. अनुभाव का लक्षण है-

उद्बुद्धं कारणैः स्वैः स्वैर्बहिर्भावं प्रकाशयन्।
लोके यः कार्यरूपः सोऽनुभावः काव्यनाट्ययोः।

66. व्यभिचारीभाव का लक्षण है-' स्थिरतया वर्तमाने हि रत्यादौ निर्वेदादिः प्रादुर्भावतिरोभावाभ्याम् आभिमुख्येन चरति इति।

67. रस के विषय में अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद सभी की अपेक्षा श्रेष्ठ है।

68. अभिनवगुप्त के मत में रस सूत्र का अर्थ है- 'विभावानुभावव्यभिचारिणां संयोगात् स्थायिभावस्य रसात्मना अभिव्यक्तिः इति।

ध्यान दें:

69. साहित्य दर्पण में रसाभिव्यक्ति कारिका कही है-

''विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणा तथा।
रसतामेति रत्यादिः स्थायिभावः सचेतसाम्॥

70. रसास्वाद कारिका-

''सत्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशनन्दचिन्मयः।
वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वाद सहोदरः॥
लोकोत्तरचमत्कारप्राणः कैश्चित्प्रमातृभिः।
स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः॥

71. साधारणीकरण व्यापार से विभाव आदि निर्विशेष होते हैं।

72. रति शोकादि भाव रसत्व प्राप्ति में पूर्वपर्यन्त स्थिरता से ही रहते हैं। इसलिए रति शोकादि भाव संसार में स्थायी भाव कहलाते हैं।

73. स्थायिभाव-

'रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा।
जुगुप्सा विस्मयश्चेत्थमष्टौ प्रोक्ताः शमोऽपि च॥

74. जगन्नाथ का रस लक्षण तो भग्नावरण रस ही है।

75. नव रस होते हैं।

'श्रृंगारहास्यकरुणा रौद्रवीरभयानकाः।
वीभत्सोऽद्भुत इत्यष्टौ शान्तोऽपि नवमो रसः॥'

76. श्रृंगार, हास्य, करुण रसों के क्रमानुसार विष्णु, प्रथमगण और यम देवता है।

77. श्रृंगार, हास्य, करुण रसों के क्रमानुसार श्याम, श्वेत और कपोत वर्ण है।

78. रौद्र, वीर, भयानक के क्रमानुसार रुद्रः, महेन्द्र और काल देवता है।

79. रौद्र, वीर, भयानक के क्रमानुसार रक्त, हेमवर्ण और कृष्ण वर्ण है।

80. बीभत्स, अद्भुत, शान्त के क्रमानुसार महाकाल, गन्धर्व, और नारायण देवता है।

81. बीभत्स, अद्भुत और शान्त के क्रमानुसार नील, पीत और अतिधवल वर्ण है।